संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक १४ ● ०३ अप्रैल २०१८ बैसाख कृष्ण पक्ष तृतीया संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

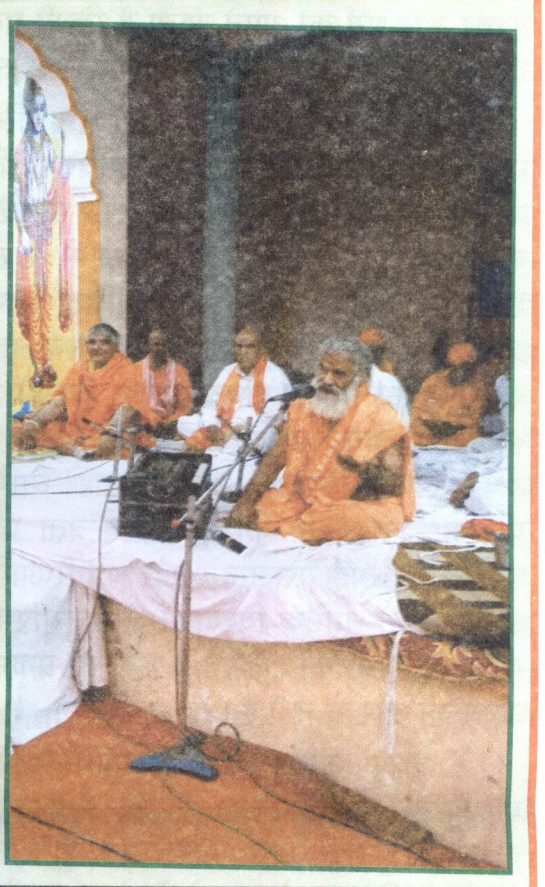

महाशय धर्मपाल आर्य जी का 95वाँ जन्मोत्सव समारोह

–डॉ0 धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

एम.डी.एच. मसालों के बादशाह, दानवीर, शूरवीर आर्यसामज के वयोवृद्ध नेता एवं आर्यजगत् की शोभा म० धर्मपाल आदि अपने जीवन के १०० वर्ष पूरा करने के लिए उत्तम दिनचर्या, उत्तम भोजन, उत्तम विचार उत्तम परिवार बनाकर आज विश्व में कीर्तिमान हो रहे हैं ९५वां जन्मदिन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने ताल कटोरा स्टेडियम में मनाया गया १०१ सन्यासियों की उपस्थिति में भव्य यज्ञ का आयोजन हुआ फिर मंच से वेद मन्त्रों का पाठ किया गया भक्ति संगीत का आनन्द आर्य जनता ने लिया तत्पश्चात् प्रमुख संयासी वर्ग ने आशीर्वाद दिया जिसमें स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी सदानन्द जी स्वामी देवव्रत जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने प्रतिनिधत्व कर उनकी लम्बी आयु की कामना की तत्पश्चात् पूरे दूश की आर्य *प्रतिनधि सभाओं के प्रधान एवं* मन्त्री मंच की शोभा बढ़ाने आये। उ०प्र० सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती भी उपस्थित रहे दिल्ली सभा के प्रधान प्रधान धर्मपाल आर्य ने सभी की ओर से सम्बोधित किया फिर सुरेश अग्रवाल और प्रकाश आर्य संसाधन मंत्री ने शुभकामनायें दी उ०प्र० सरकार की ओर से भी योगी जी ने एक विधायक को प्रतिनिधि बनाकर भेजा उनके विषय में बनाया गया वृत्तचित्र एवं उनके किये गए कार्यों की प्रशंसा की गई बच्चों की प्रस्तुति अत्यन्त आकर्षक रही २७ मार्च को कीर्तिनगर स्थित फैक्ट्री पर यज्ञ एवं विशाल भण्डारे का भी आयोजन किया गया वहां यज्ञ के पश्चात् नन्दिता शास्त्री, ऋषिपाल शास्त्री, डा० महेश विद्यालंकार एवं स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने उनके कार्यों की प्रसंशा की सायंकाल आर्यसमाज एवं एस.डी. विद्यालय कीर्ति नगर में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया दिल्ली सभा के मन्त्री विनय आर्य जी सम्पूर्ण कार्य क्रम के संयोजक रहे आपने पूरे देश से आये अतिथियों की सेवा की उनकी भारी प्रशंसा की गई। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान डॉ० धीरज सिंह आर्य ने भी म० धर्मपाल आर्य जी के अच्छे स्वस्थ और दीर्घायु की कामना की है। भूयश्चशरदः शतात्।

वैदिक मिशन मुम्बई के वेद महोत्सव की झलक

अन्तरंग अधिवेशन सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहायुक्त एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक–२२ अप्रैल, २०१८ दिन–रविवार (बैसाख शुक्ल सप्तमी) को प्रातः ११.०० बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में संस्था के प्रधान/का०प्रधान– डॉ० धीरज सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी, जिसमें आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

एजेण्डा एवं विस्तृत विषयों की रूप–रेखा सभी को डाक द्वारा भेज दी गई है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनाये।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मन्त्री

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

ईश्वर और धर्म

यों तो समाजवादी और साम्यवादी संप्रदायाचार्यों एवं उनके द्वारा प्रचारित पुस्तकों के विरूद्ध ही ईश्वर और धर्म के मनने वाले ने आन्दोलन और प्रचार किया है, और इस कार्य में जिस प्रकार की उग्र और कटु भाषा का प्रयोग किया है उसकी तुलना में अन्य पुस्तकों की भाषा निःसन्देह संयत कही जा सकती है। कहा जाता है कि जब रूस में साम्यवादी (बोल्शेविक) राज्यपद्पति की स्थापना हुई तो सरकारने ईश्वर और धर्म को अपने राज्य में किसी प्रकार का प्रश्रय न देना ही अपने देश के लिए कल्याण जनक समझा।

इसलिए अनेक गिरजाघरों में प्रचलित ईसाई धर्म के संचालकों द्वारा नियमित रूप से ईश्वर प्रार्थना आदि धार्मिक कृत्यों के स्थान में सरकार की ओर से शिक्षणालयादि का कार्य संचालित किया गया वास्तव में आरम्भिक सम्यवादी शासकों ने इस कार्य को कदाचित् अत्याचारी के द्वारा प्रोत्साहन प्राप्त करने को रूस के प्रचलित ईसाई धर्म को राष्ट्र की उन्नति में बाधक समझ कर ही ऐसा किया होगा क्योंकि द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त उसी रूस सरकार ने अपने–अपने विश्वास के अनुसार धार्मिक कर्तव्यों के पालनार्थ नागरिकों को पूरी स्वतन्त्रता प्रदान की है और तदनुसार ईसाई मुसलमान और यहूदी आदि रूसी नागरिक अपने–अपने धार्मिक विश्वासों के अनुसार निर्दिष्ट धर्मग्रन्थों के अनुकूल धर्मकार्य करते हैं। किसी प्रकार की कोई बाधा राज्य की ओर से नहीं है।

इधर अंग्रेज की कूटनीति और भारतीयों की पारस्परिक कलहप्रियता से १५ अगस्त सन् १९४० को इन्डियन यूनियन और पाकिस्तान यूनियन इन दो स्वतंत्र राष्ट्रों में विमूख होकर दोनों राष्ट्र अपने–अपने अधिकृत भूक्षेत्रों में राज्य शासन करने लगे। इन्डियन यूनियन में प्रजातन्त्र एकान्ततः धर्मनिरपेक्ष (सेकूलर) धनतन्त्र की नवीन विधान के अनुसार स्थापना की गई। पाकिस्तान ने इस्लाम धर्म के अनुसार एक धार्मिक राज्य शासन प्रणाली के अनुसार अपने राष्ट्र के कार्यों को करना प्रारम्भ किया। भारतीय सरकार ने स्पष्ट रूप से अपने राष्ट्र में निवास करनेवाले प्रत्येक हिन्दू, मुसलमान, ईसाई यहूदी, पारसी, बौद्ध, जैन, और सिक्ख धर्मावलम्बियों को अपने–अपने धर्म ग्रन्थों के अनुसार अपने–अपने वर्ग मन्दिरों में ईश्वरोपसनादि करने की पूर्ण सुविधा और सुरक्षा प्रदान की। पाक सरकार ने अपने धार्मिक विश्वासों और परम्पराओं के अनुसार मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य हिन्दू सिक्ख नागरिकों के साथ जैसा अमव्य और अन्यायोचित व्यवहार किये जाने में साक्षात् अथवा परोक्ष रूप से प्रोत्सहान दिया उसकी तुलना के लिए संसार के इतिहास में अन्य कोई उदाहरण मिलना कदाचित् असम्भव है। पाकिस्तान की स्थापना होने से लेकर अब तक अनेको हिन्दू और सिक्खों के धर्म मन्दिरों और गुरूद्वारों को भ्रष्ट करने की रिपोर्ट भारतीय सरकार को विश्वस्त रूप से प्राप्त हुई है कि जिसके सत्य होने में किसी को किसी प्रकार का सन्देह नहीं हो सकता।

पाकिस्तान की सरकार और उसके सहधर्मी मुस्लिम नागारिक ईश्वर और धर्म दोनों के मानने वाले और प्रचार करने वाले कहे जाते हैं। फिर भी अल्पसंख्यक हिन्दू और सिक्खों के धर्म मंदिरों और गुरूद्वारों को इसलिये भ्रष्ट नहीं किया गया कि उनमें धर्म कृत्यों के अतिरिक्त अन्य कोई अनुचित कार्य नहीं होते थे अपितु इसलिये स्पष्ट किया गया कि उनमें मुसलमानों से भिन्न आस्तिक हिन्दू और सिक्ख अपने–अपने धार्मिक विश्वासों के अनुसार ईश्वरोपासना किया करते थे।

– सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ षष्ठ समुल्लासारम्भः

अथ राजधर्मान् वक्ष्यामः

राजधर्मान् प्रवक्ष्यामि यथावृत्तो भवेन्नृपः। सम्भवश्य यथा तस्य सिद्धिश्च परमा यथा।।१।।
ब्राह्मं प्राप्तेन संस्कारं क्षत्रियेण यथाविधि। सर्वस्यास्य यथान्यायं कर्त्तव्यं परिरक्षणम्।।२।। मनु०।।

अब मनु जी महाराज ऋषियों से कहते हैं कि चारों वर्ण और चारों आश्रामों के व्यवहार कथन के पश्चात् राजधर्मों को कहेंगे कि जिस प्रकार का राजा होना चाहिए और जैसे इस के होने का सम्भव तथा जैसे इस को परमसिद्धि प्राप्त होवे उस को सब प्रकार कहते हैं।।१।। कि जैसा परम विद्वान् ब्राह्मण होता है वैसा विद्वान् सुशिक्षित होकर क्षत्रिय को योग्य है कि इस सब राज्य की रक्षा यथावत् करे।।२।। उस प्रकार यह है–

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि।। (ऋ०मं०३। सू० ३८। मं० ६।।)

ईश्वर उपदेश करता है कि (राजाना) राजा और प्रजा के पुरूष मिल के (विदथे) सुखप्राप्ति और विज्ञानवृद्धिकारक राजा प्रजा के सम्बन्धरूप व्यवहार में (त्रीणि सदांसि) तीन सभा अर्थात् विद्यर्य्यसभा, धर्मार्य्यसभा, राजर्य्यसभा नियत करके (पुरूणि) बहुत प्रकार के (विश्वानि) समग्र प्रजासम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को (परिभूषथः) सब ओर से विद्या, स्वातन्त्रय, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करें।

तं सभा च समितिश्च सेना च ।।१।। अथव कां० १५। अनु० २। व० ६। मं० २।।
सभ्य सभां में पाहि ये च सभ्याः सभासदः।।२।। –अथर्व कां० ११। अनु० ७। व० ५५। मं० ६।।

(तम्) उस राजधर्म को (सभा च) तीनों सभा (समितिश्च) संग्रामादि की व्यवस्था और (सेना च) सेना मिलकर पालन करें।।१।।

सभासद् और राजा को योग्य है कि राजा सब सभासदों को आज्ञा देवे कि हे (सभ्य) सभा के योग्य मुख्य सभासद् तू (मे) मेरी (सभाम्) सभा की धर्मयुक्त व्यवस्था का (पाहि) पालन कर और (ये च) जो (सभ्याः) सभा के योग्य (सभासदः) सभासद हैं वे भी सभा की व्यवस्था का पालन किया करें।।२।।

इस का अभिप्राय यह है कि एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए किन्तु राजा जो सभापति तद्धीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे। यदि ऐसा न करोगे तो–

राष्ट्रमेव विश्या हन्ति तस्माद्राष्ट्री विशं घातुकः।। विशमेव राष्ट्रायाद्यां करोति तस्माद्राष्ट्री विशमत्ति न पुष्टं पशुं इति।।१।। –शत० कां० १३। अनु० २। ब्रा० ३।।

जो प्रजा से स्वतन्त्र स्वाधीन राजवर्ग रहै तो (राष्ट्रमेव विश्या हन्ति) राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करे। जिसलिये अकेला राजा स्वाधीन वा उन्मत्त होके (राष्ट्री विशं घातुकः) प्रजा का नाशक होता है अर्थात् (वशमेव राष्ट्रायाद्यां करोति) वह राजा प्रजा को खाये जाता (अत्यन्त पीड़ित करता) है इसलिये किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिए। जैसे सिंह वा मांसाहारी हृष्ट पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं, वैसे (राष्ट्री विशमत्ति) स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है अर्थात् किसी को अपने से अधिक न होने देता, श्रीमान् को लूट खूंट अन्याय से दण्ड लेके अपना प्रयोजन पूरा करेगा। इसलिये–

इन्द्रो जयाति न परा जयाता अधिराजो राजसु राजयातै। चर्कृत्य ईड्यो वन्द्यश्चोपसद्यो नमस्यो भवेह।।
–अथर्व कां० ६। अनु० १०। व० १८। म० १।।

हे मनुष्यो! जो (इह) इस मनुष्य के समुदाय में (इन्द्रः) परम ऐश्वर्य का कर्त्ता शत्रुओं को (जयाति) जीत सके (न पराजयातै) जो शत्रुओं से पराजित न हो (राजसु) राजाओं में (अधिराजः) सर्वोपरि विरजामान (राजयातै) प्रकाशमान हो (चकृत्यः) सभापति होने को अत्यन्त योग्य (ईड्यः) प्रशंसनीय गुण, कर्म, स्वभावयुक्त (वन्द्यः) सत्करणीय (चोपसद्यः) समीप जाने और शरण लेने योग्य (नमस्यः) सब का माननीय (भव) होवे उसी को सभापति राजा करें।

इमं देवाऽ असपत्नँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ।।१।।
–यजु० अ० ९ । मन्त्र ४०।।

हे (देवाः) विद्वानो राजप्रजा जनो तुम (इमम्) इस प्रकार के पुरूष को (महते क्षत्राय) बड़े चक्रवर्ती राज्य (महते ज्यैष्ठ्याय) सब से बड़े होने (महते जानराज्याय) बड़े-बड़े विद्वानों से युक्त राज्य पालने और (इन्द्रस्येन्द्रियाय) परम ऐश्वर्ययुक्त राज्य और धन के पालन के लिये (असपत्नंसुवध्वम्) सम्मति करके सर्वत्र पक्षपातरहित पूर्ण विद्या विनययुक्त सब के मित्र सभापति राजा को सर्वाधीश मान के सब भूगोल शत्रुरहित करो।। और–

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे। युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः।।
–ऋ० मं० १। सू० ३९। मं० २।।

ईश्वर उपदेश करता है कि हे राजपुरूषो! (वः) तुम्हारे (आयुधा) आग्नेयादि अस्त्र और शतघ्नी (तोप) भुशुण्डी (बन्दूक) धनुष बाण करवाल (तलवार) आदि शस्त्र शत्रुओं के (पराणुदे) पराजय करने (उत प्रतिष्कभे) और रोकने के लिए (विळु) प्रशंसित और (स्थिरा) दृढ़ (सन्तु) हों (युष्माकम्) और तुम्हारी (तविषी) सेना (पनीयसी) (अस्तु) होवे कि जिस से तुम सदा विजयी होवो परन्तु (मा मर्त्यस्य मायिनः) जो निन्दित अन्यायरूप काम करता है उस के लिए पूर्व चीजें मत हों अर्थात् जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं तब नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

महाविद्वानों को विद्याभाऽधिकारीः, धार्मिक विद्वानों को धर्मसभाऽधिकारी, प्रशंसनीय धार्मिक पुरूषों को राजसभा के सभासद् और जो उन सब में सर्वोत्तम गुण, कर्म, स्वभावयुक्त महन् पुरूष हो उसको राजसभा का पतिरूप मान के सब प्रकार से उन्नति करें। तीनों सभाओं की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम और नियमों के आधीन सब लोग वर्तें, सब के हितकारी कामों में सम्मित करें। सर्वहित करने के लिए परतन्त्र और धर्मयुक्त कामों में अर्थात् जो-जो निज के काम हैं उन-उन में स्वतन्त्र रहै। पुनः उस सभापति के गुण कैसे होने चाहिए–

इन्द्राऽनिलयमार्काणामग्नेश्च वरुणस्य च। चन्द्रवित्तेशयोश्चैव मात्रा निर्हृत्य शाश्वतीः।।१।।
तपत्यादित्यवच्चैष चक्षूंषि च मनांसि च। न चैनं भुवि शक्नोति कश्चिदप्यभिवीक्षितुम्।।२।।
सोऽग्निर्भवति वायुश्च सोऽर्कः सोमः स धर्मराट्। स कुबेरः स वरूणः स महेन्द्रः प्रभावतः।।३।।

वह सभेश राजा इन्द्र अर्थात् विद्युत के समान शीघ्र ऐश्वर्यकर्त्ता, वायु के समान सब के प्राणवत् प्रिय और हृदय की बात जाननेहारा, यम पक्षपातरहित न्यायाधीश के समान वर्त्तनेवाला, सूर्य्य के समान न्याय, धर्म, विद्या का प्राकशक अन्धकार अर्ाित् अविद्या अन्याय का निरोधक, अग्नि के समान दुष्टों को भस्म करने हारा, वरूण अर्थात् बांधने वाले के सदृश दुष्टों को अनेक प्रकार से बांधने वाला, चन्द्र के तुल्य श्रेष्ठ पुरूषों को आनन्द दाता, धनाध्यक्ष के समान कोशों का पूर्ण करने वाला समभापति होवे।।१।।

जो सूर्यवत् प्रतापी सब के बाहर और भीतर मनों को अपने तेज से तपानेहारा, जिस को पृथिवी में करड़ी दृष्टि से देखने को कोई भी समर्थ न हो।।२।।

और जो अपने प्रभाव से अग्नि, वायु, सूर्य्य, सोम, धर्मप्रकाशक, धनवर्द्धक दुष्टों का बन्धनकर्त्ता, बड़े ऐश्वर्यवाला होवे, वही सभाध्यक्ष सभेश होने के योग्य होवे।।३।।

क्रमशः

जलियाँवाला बाग काण्ड

ब्रिटिश साम्राज्य पर बदनुमाकाला धब्बा

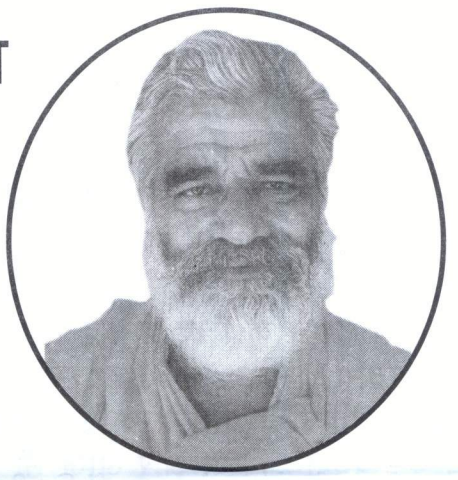

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

इतिहास साक्षी हैं कि प्रथम विश्व युद्ध में, जो कि १६१४ से १६१८ तक चार वर्ष चला था, मित्र राष्ट्रों में अकेला ब्रिटेन ही बढ़–चढ़ कर हिस्सा नहीं ले रहा था बल्कि उसके अधीन जितने भी राष्ट्र थे उन सबको इसमें झोंक दिया गया था। भारत को भी अपनी कोई स्वतंत्र हस्ती तो थी नहीं, अतः उसके सैकड़ों युवकों को थोड़ा बहुत फौजी प्रशिक्षण देकर लड़ाई के मैदान में झोंक दिया गया था। आर्थिक शोषण की बात तो अलग थी।

मित्र राष्ट्रों ने वायदे भी कोई कम बढ़–चढ़ कर नहीं किए थे। ब्रिटेन भी किसी से पीछे नहीं था। सबसे प्रमुख व आकर्षक घोषणा थी कि यदि मित्र राष्ट्र इस युद्ध में जीत गए तो वे देखेंगे कि संसार में कोई देश किसी का गुलाम न बना रहे। सच तो यह है कि इस घोषणा के पीछे उनकी एक मंशा थी कि गुलाम देश की जनता अपनी स्वतंत्रता के लिए हिले–ढुले नहीं। शान्त बनी रहे ताकि उनके अपने युद्ध प्रयासों में कोई बाधा न उत्पन्न हो।

परन्तु भारत के क्रान्तिकारी यह जानते थे कि कोई भी गुलाम देश बिना संघर्ष किये आजाद नहीं हुआ। अतः उन लोगों ने अपना आंदोलन कभी शिथिल नहीं होने दिया। १६१४ और १६१८ के बीच क्रान्ति के कई प्रयास हुए। इन्हीं में प्रमुख था अमेरिका में गर पार्टी, की स्थापना जिसके अन्तर्गत अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हजारों की तादा में एक जापनी जहाज से अस्त्र शस्त्र लाकर भारत के बन्दरगाह में उतरने की असफल चेष्टा हुई। इस प्रयास में कई साथी शहीद हुए और सैकड़ो की तादाद में गिरफ्तार कर जेल में बछन कर दिए गए। इस पर भी कुछ साथी भेद अंग्रेजों की पुलिस से बचते बचाते पंजाब पहुंच गये थे। ''कामागाटामारू जहाज काण्ड'' के नाम से यह घटना महशहूर है।

''गदर पार्टी'' के जो साथी किसी प्रकार बच–बचाकर पंजाब पहुंच गये थे उनमें करतार सिंह सराबा व अन्य साथियों ने राम बिहारी बोस एवं शचीन्द्र नाथ सान्याल जैसे महान क्रान्तिकारियों से मिलकर उत्तर भारत की कई छावनियों में हिन्दुस्तानी फौजियों को क्रांति हेतु तैयार कर लिया था परन्तु एक देशद्रोही की मुखबिरी की वजह से वह प्रयास भी असफल रहा था। उस घटना में सैकड़ों फौजी भाई गोली से उड़ा दिए गये थे व हजारों को जेल यातनाएं सहनी पड़ी थी। यह सब फौजी अदालत द्वारा किया गया था।

इसी घटना के सिलसिले में ''प्रथम लाहौर षड्यन्त्र केस'' के नाम से कई क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चलाया गया था। इसी केस के अन्तर्गत क्रान्तिकारियों करतार सिंह सराबा, विष्णु गणेश पिंगले, बख्शीश सिंह, सुरैन सिंह, सुरैन सिंह 'द्वितीय', हरनाम सिंह एवं जगत सिंह को फांसी के फन्दे चूमने पड़े थे।

इसी बीच थोड़े–थोड़े अन्तराल से ''मैनपुरी षड़यन्त्र केस'' एवं ''बनारस षड्यन्त्र केस'' चले। ''मैनपुरी केस'' में गेंदालाल दीक्षित एवं ''बनारस केस'' में शवीन्द्र नाथ सान्याल प्रमुख अभियुक्त थे। दोनों केसों में किसी साथी को फांसी तो नहीं दी गयी थी, हां लम्बी सजाएं अवश्य दी गई थी। शचीन्द्र नाथ सान्याल को आजीवन काले पानी की सजा मिली थी और उन्हें अपनी सजा काटने हेतु ''अण्डमान'' भेज दिया गया था।

काला कानून– रौलट एक्ट–

इस ब्रिटिश शासन अपनी कुछ और ही योजना बना रहा था। युद्ध के दौरान किए गये ऊँचे वायदे कि युद्ध जीतने के बाद वे भारत को स्वतः शासन प्रदान करेंगे, ब्रिटेन को युद्ध जीतने के आसार जैसे ही नजर आने लगे, उसने अपना असली रूप दिखलाना शुरू किया। क्रांन्तिकारी गतिविधियों का मुकाबला करने के लिए एक ''रौलट कमीशन'' की स्थापना की गई और उसी की रिपोर्ट के इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउन्सिल में दो बिल पेश किए गए जिसके अन्तर्गत शासन को यह अधिकार दिए जाने थे कि बिना वारन्ट व बिना कोई कारण बताए जिसे चाहे पकड़ सके और विशेष अदालतों में मुकदमा चलाकर सख्त सजा दिलवा सके, जिसको कोई अपील भी न की जा सके।

गांधी जी ने बम्बई में २८ फरवरी, १६१६ को इन दोनों बिलों का सख्त विरोध किया था। जिस पर भी काउन्सिल में दोनों बिल १८ मार्च, १६१६ को पास करवा लिए गए। इसका विरोध काउन्सिल में तो हुआ ही, बाहर जनता ने भी जबरदस्त विरोध किया था।

गांधी जी की भूख हड़ताल–

२४ मार्च, १६१६ को गांधी जी ने विरोध स्वरूप २४ घंटे का उपवास रखा और आह्वान किया कि पूरा देश ३० मार्च को शोक दिवस मनाए।

धीरे–धीरे असंतोष ने उग्र रूप धारण करना शुरू कर दिया। पहली अप्रैल, १६१६ को दिल्ली में जबरदस्त दंगा हो गया। दुकानों व व्यापरिक संस्थानों को बन्द करा रहे जुलूस पर पुलिस ने गोलियां चलाई जिसमें कई कार्यकर्ता शहीद हुए व सैकड़ों घायल हो गए।

गांधी जी गिरफ्तार

६ अप्रैल १६१६ को गांधी जी बम्बई से दिल्ली के लिए रवाना हुए। १० अप्रैल को बाम्बे बड़ोदा सेन्ट्रल इण्डिया ट्रेन से सफर करते समय शासन की ओर से उन्हें एक नोटिस तामील की गई तथा कोर्स कला स्टेशन पर ट्रेन से उतार कर गांधी जी मथुरा भेज दिए गए। साथ ही एक आदेश द्वारा उनका दिल्ली व पंजाब प्रदेश में प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया। गांधी जी इस आदेश को मानने से इन्कार कर पंजाब के गुड़गांव जिला के पलबल स्टेशन पहुंचे। वहां उन्हें गिरफ्तार कर बम्बई ले जाया गया और बम्बई शहर से बाहर जाने की पाबन्दी लगा दी गई। १० अप्रैल को ही गांधी जी ने देशवासियों को संदेश दिया कि रौलट एक्ट जैसे काले कानून के रहते किसी के लिए भी सम्मान पूर्वक रहना सम्भव नहीं है। उसी दिन पंजाब के कई प्रमुख नेताओं को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

गांधी जी की गिरफ्तारी पर चारों ओर दंगे–

गंधी जी की गिरफ्तारी पर १० अप्रैल की दिल्ली में आम हड़ताल हुई। उसी दिन लाहौर और अमृतसर में भयंकर दंगे हुए। जैसा कि होता आया है पुलिस ने दोनों जगह जम कर जनता पर गोलियां चलाई जिसमें मरने वालों की संख्या काफी थी।

कलकत्ता में जनता का आक्रोश –

१२ अप्रैल, १६१६ को कलकत्ता में भी जुलूस व सभाओं का आयोजन किया गया वहां भी जनता नियंत्रण से बाहर हुई और पुलिस ने अपनी कार्यवाही की।

लाहौर में दंगा, चार अंग्रेज मारे गए–

१२ अप्रैल, १६१६ को लाहौर में भी जनता का आक्रोश चरम सीमा पर था जनता आपे से बाहर थी। उत्तेजना में उन्होंने चार अंग्रेज व्यापारियों को मौत के घाट उतार दिया।

जलियाँवाला बाग–नर संहार–

अमृतसर में भी जनता को रोष कम नहीं था। १३ अप्रैल, १६१६ को रौलट एक्ट एवं गांधी जी की गिरफ्तारी के विरोधस्वरूप वहां के जलियांवाला बाग में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया था।

जलियांवाला बाग पवित्र स्वर्ण मन्दिर के निकट चारों ओर ऊंची–ऊंची दीवारों से घिरा हुआ था। बाग में प्रवेश के लिए केवल एक सकरा गलियारा ही था। उस दिन बैशाखी का पर्व भी था। धारा १४४ की परवाह न करते हुए, गैर सरकारी अनुमान से लगभग बीस हजार का जन समूह वहां एकत्रित था।

श्री हंसराज जनसमूह को सम्बोधित कर रहे थे कि जिलाधीश के आदेश पर फौजी कमाण्डर डायर अपने साथ एक पूरी सशस्त्र कम्पनी लेकर वहां पहुंचा और बिना किसी चेतावनी के अपने सिपाहियों को जनसमूह पर गोलियां चलाने का आदेश दे दिया तथा रायफलों से तब गोलियां चलवाता रहा जब तक उनकी सब गोलियां खत्म नहीं हो गई। शुरू में खड़े होकर गोलियां चलाई गई और जब देखा गया कि लोग बचाव हेतु लेट गये हैं तो लेट कर निहत्थी जनता पर गोली की वर्षा की गई। उस दिन गैर सरकारी अनुमान से मरने वालों की संख्या लगभग सोलह सौ थी जब कि सरकारी आंकड़े १६५० गोलियां चलाने की बात तो स्वीकर करते हैं किन्तु मृतकों

शेष पृष्ठ ७ पर

शिक्षा का महत्व

– आचार्य सोमेन्द्र सिंह

उग्रोऽर्चिता दिवमारोह सूर्य १ (अथर्व १६.६५.१) हे सूर्य समाज तेजस्वी मनुष्य तू अपने तेज के साथ उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर चढ़ जा। मनुष्य उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर मात्र शिक्षा के द्वारा ही पहुंच सकता हैं जब से मानव सभ्यता का सूर्य उदय हुआ है तभी से भारत अपनी शिक्षा तथा दर्शन के लिए प्रसिद्ध रहा है। यह सब भारतीय शिक्षा के उद्देश्यों का ही चमत्मकार है कि भारतीय संस्कृति ने संसार का सदैव पथ प्रदर्शन किया और आज भी जीवित है। वर्तमान युग में भी महान दार्शनिक एवं शिक्षा मंत्री इसी बात का प्रयास कर रहे हैं। कहा भी है कि जीवन एक पाठशाला है जिसमें अनुभवों के आधार पर हम शिक्षा पाते हैं। शिक्षा का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा हमारी समृद्धि में आभूषण, विपत्ति में शरण स्थान और समस्त कालों में आनन्द स्थान होती हैं। जीवन लक्ष्य की पूर्ति के लिए शिक्षा आवश्यक है। महान दार्शनिक एवं शिक्षाविसारद डॉ० राधाकृष्णन भी मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाने के लिए शिक्षा को सर्वाधिक आवश्यक मानते हैं। उनके अनुसार शिक्षा वह जो मनुष्य को ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ उसके ह्रदय एवं आत्मा का विकास करती है। शिक्षा व्यक्ति के स्वयं के विकास के साथ–साथ समाज और राष्ट्र के विकास के लिए भी प्रेरित करती है। शिक्षा के महत्व को परिलक्षित करते हुए स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि "जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें यथार्थ में वही वास्तविक शिक्षा होगी।" स्वामी जी भारत में ऐसी शिक्षा चाहते थे जिसमें उसके अपने आदर्शवाद के साथ पाश्चात्य कुशलता का सामंजस्य हो उनका कहना था कि लोगों को आत्मनिर्भर बनाना अति आवश्यक है वरना सारे संसार की दौलत से भी भारत के एक गांव की सहायता नहीं की जा सकती। अतः नैतिक तथा बौद्धिक दोनों ही प्रकार की शिक्षा प्रदान करना देश व समाज का पहला कार्य होना चाहिए। भार्तहरि ने अपने नीति शतक में लिखा है कि "विद्या गुरूणा गुरू" अर्थात् विद्या गुरूओं की भी गुरू है विद्या से ही मानव का जीवन स्वर्णिम बन सकता है। बिना विद्या के नर पशु के समान है यथा "विद्या विहीन पशु" मानव को सही प्रकार से परिभाषित करने के लिए शिक्षा अति आवश्यक है।

ये कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आज जिस तरह का वातावरण चारों तरफ फैलता जा रहा है। जो बच्चों की शिक्षा के साथ–साथ समाज के लिए घातक है। हमें ऐसी शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। जिससे बच्चों का चरित्र निर्माण हो सकें, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक पैरों पर खड़ा होने सीखें। भौतिकवादी स्वार्थपरक सोच के फैलते प्रभाव को कम करने के लिए आवश्यक है कि स्कूली शिक्षा के साथ–साथ नैतिक शिक्षा शांति शिक्षा की भी नींव मजबूत की जाए।

लेकिन देश की शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य के बारे में एक कवि ने अपनी चार पंक्तियों में वर्णन किया है–

चलो जलायें दीप वहां जहां अभी भी अंधरा है। शिक्षा पाकर भिक्षा मांगे, युवजन खाए ठोकर आज आजादी का स्वप्न दिखाकर पाखंडी करते हैं राज।।

भ्रष्ट व्यवस्था ने भी डाला अब यहां डेरा है।
चलो जलाएं दीप वहां जहां अभी भी अंधेरा है।।

हमें शिक्षा के वास्तविक लक्ष्य व शिक्षा की भूमिका पर ध्यान देने की आवश्यकता है शिक्षा ही मानव को महामानव बनाती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में शांति शिक्षा की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। वर्तमान के भयावह दौर में जब मानव गलाकाट प्रतिस्पर्धा का अभिन्न अंग है वह स्वयं के सिवा किसी का ध्यान नहीं रखता किसी दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना, उसकी मान्यताओं का आदर करना मात्र मृगतृष्णा है। शिक्षा के अभाव के कारण ही आज पूरे विश्व में आतंकवाद का दानव अपने विकराल रूप को धारण किए हुए है उन्हें शिखा तो दी जा रही है परन्तु शांति का नहीं अपितु अशांति की इसीलिए आज के दौर में शांति शिक्षा की आवश्यकता है। शिक्षा मानव को आपस में प्रेम सौहार्द, समता की भावना को जागृत कर श्वि का एक जिम्मेदार नागरिक बनाती है। आज शिक्षा में ऐसे मूल्यों, आदर्शों को समाहित करने की आवश्यकता है जिससे पूरा भूमण्डल "वसुधैव कुटम्बकम्" की भावना से ओत प्रोत हो। प्रत्येक मानव अपने कर्तव्य के साथ शांति को अपनायें कविता की ये पंक्तियां हमारा मार्गदर्शन करती है।

कर्तव्य की तलवार से अधिकारों को वश में कर लो।
और शांति के श्रृंगार से मन में खुशियां भर लो।।
ये जिन्दगी मौत की अमानत है ये हमेशा याद कर लो।।
कर्तव्य की .....
आज अपना है कुछ अच्छा कर लो
कल किसी और की अमानत है याद कर लो।।
कर्तव्य की तलवार से अधिकारों को वश में कर लो।
शांति के श्रृंगार से मन में खुशियां भर लो।।

शांति शिक्षा के जीसीपीई स्कूलों में शांति शिक्षा को बढ़ावा देता है उनका उद्देश्य है।

१. शांति शिक्षा सभी पाठ्यक्रम में एकीकृत देखने के लिए समुदाय और दुनिया भर में परिवार शिक्षा जीवन का एक हिस्सा बनाने के लिए।

२. शांति के लिए सिखाने के लिए सभी शिक्षकों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय योगदान।

शिक्षा से ही विश्व शांति संभव है। विश्व शांति सभी देशों और लोगों के बीच और उनके भीतर स्वतंत्रता शांति और खुशी का एक आदर्श है। विश्व शांति पूरी पृथ्वी में अहिंसा स्थापित करने का एक विचार है। जिसके तहत देश या तो स्वेच्छा से या शासन की एक प्रणाली के जरिये इच्छा से सहयोग करते है। ताकि कुछ को रोका जा सके हलांकि कभी–कभी इस शब्द का प्रयोग विश्व शांति के लिए सभी व्यक्तियों के बीच सभी तरह की दुश्मनी के खात्मे के संदर्भ में किया जाता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शांति शिक्षा जीवनदायिनी के समान है आज पूरा विश्व जिन समस्याओं से जूझ रहा है उसना निराकरण मात्र शांति शिक्षा के द्वारा ही संभव है। वर्तमान में आज मानव आपसी बैर भावना, ईर्ष्या, कपट एवं संकीर्ण मनासिकता का गुलाम बन गया है। इसे केवल शिक्षा के द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है। चारों तरफ अशांत माहौल को शांति शिक्षा ही शांत कर सकती है। यदि शिक्षा के साथ भारतीय मूल्यों एवं आदर्शों को भी शिक्षा में समाहित करने की आवश्यकता है। भारतीय शिक्षा मानव शांति की नहीं अपितु पूरे ब्रह्माण्ड की शांति की बात करती है।

यथा द्यौ शान्ति अंतरिक्षं शान्ति पृथ्वी शान्ति आपाः शान्ति औषधी शान्ति अर्थात् अंतरिक्ष में शांति हो पृथ्वी में शांति हो जल में शांति हो औषधि में शान्ति हो।

शांति शिक्षा ही मानव को चरमोत्कर्ष पर पहुंचा सकती है।

विनाशकारी दम्भ

बंगाल में द्वारका नदी के तट पर तारापीठ नामक एक प्रसिद्ध स्थान है। वहां तारा देवी का भव्य मन्दिर है। किसी समय में एक व्यक्ति तारादेवी के दर्शन करने के लिए आये, दर्शन करने से पूर्व उन्होंने नदी में स्नान कर अपने नित्य नैमित्तिक कर्म सम्पन्न करने का निश्चय किया।

इस प्रकार स्नानोपरान्त में वे तट पर बैठे आह्निक कर्म कर रहे थे कि उसी समय प्रसिद्ध अघोरी सन्त वामाक्षेपा नदी में स्नान कर रहे थे। वे हस–हस कर उस सज्जन के ऊपर जल के छींटे डालन लगे। उस व्यक्ति को पता नहीं था कि जल फेंकने वाले सज्जन सन्त वामाक्षेपा हैं। उनके मुख से निकल गया– "क्या अन्धे हो गये हो? मैं अपना पाठ पूजा कर रहा हूं, और तुम उसमें विघ्न डाल रहे हो?"

ये दर्शनार्थी समीप के कोई बहुत बड़े जमींदार थे। उनको क्रोध आ रहा था।

वामाक्षेपा बोले–" तुम पूजा–पाठ कर रहे हो या कि कलकत्ते की मूर कम्पनी में बैठ कर जूते खरीद रहे हो?" कलत्ते की मूर कम्पनी उन दिनों जूतों की प्रसिद्ध कम्पनी थी। इतना कहने के बाद भी वामाक्षेपा उन पर जल डालते रहे।

किन्तु अब जमींदार का क्रोध शान्त हो गया था। उसको लगा कि यह कोई बहुत बड़े सन्त हैं जो मनुष्य की मनःस्थिति का आकलन करने में समर्थ हैं। वह समझ गया कि ये कोई असाधारण महात्मा नहीं हैं।

"हां महाराज! मैं यही सोच रहा था कि मूर कम्पनी से जूते खरीद कर घर लौटूंगा।" कहता हुआ जमींदार उनके चरणों में नतमस्तक हो गया। "दैवकार्य में दम्भ नहीं करना चाहिए।" यह कह कर महात्मा वामाक्षेपा मन्दिर की ओर चले गय।

संसार में शान्ति प्राप्त करने का एक मात्र उपाय

वैदिक धर्म–एवं मनुभर्व जनया देव्य जनम। ऋः–

वैदिक धर्म अपनाओ और मनुष्य बनो, दिव्य सन्तानों को जन्म दो

– पं0 उम्मेद सिंह विशारद

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित संस्कार विधि जो युग निर्माण में महत्वपूर्ण है, उसके ग्रहाश्रम प्रकरण में वैदिक धर्म के विषय में लिखते है कि:–

न जातु कामत्र भयान्त लोभाद। धर्म त्यजेज्जीवितस्यपि हेतोः।

धर्मो नित्यः सुख दुःखेत्व नित्ये, जीवो नित्यो हेतु स्वं त्वनित्य।। महाभारते–।।

अथार्त मनुष्यों को योग्य है कि काम से, अर्थात झूठ से कामना सिद्ध होने के कारण से वा निन्दा स्तुति आदि के भय से भी धर्म का त्याग कभी न करे और न लोभ से। चाहे झूठ अधर्म से चक्रवर्ती राज्य भी मिलता हो तथापि धर्म को छोड़कर चक्रवर्ती राज्य को भी ग्रहण न करें। चाहे भोजन हादन जल–पान आदि को जीविका भी अधर्म से हो सके वा प्राण जाते हो परन्तु जीविका के लिए धर्म को कभी न छोड़े। क्योंकि जीव व धर्म तो नित्य है तथा सुख दुःख दोनों अनित्य हैं अनित्य के लिये नित्य छोड़ना अतीव दुष्ट कर्म है इस धर्म के हेतु कि जिस शरीर आदि से धर्म होता है वह भी अनित्य हैं धन्य वे मनुष्य है जो अनित्य शरीर और सुख दुःखादि के व्यवहार से वर्तमान नित्य धर्म का त्याग कभी नहीं करते।
–संस्कार विधि।।

धर्म एवं हतो हिन्त धर्मो रक्षति रक्षितः–

तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतो ऽवधीतः।। महाभारते–।।

अथार्तः जो पुरूष धर्म का नाश करता है, उसका नाश धर्म कर देता है, और जो धर्म की रक्षा करता है, उसकी धर्म भी रक्षा करता है इसलिए मारा हुआ धर्म कभी हमें भी न मार डाले, इस भय से धर्म का हनन अर्थात् त्याग कभी न करना चाहिए।

यत्र धर्मो हव्यधर्मेण सत्य यत्रानृतेन च।

ळयन्ते प्रेक्षमाणानं हतास्तत्र सभासदा ।। मनु०।

अर्थात् जिस सभा में बैठे हुए सभासदों के सामने अधर्म से धर्म और झूठ से सत्य का हनन होता हैं उस सभा के सब सभासद मरे से ही है।

महर्षि दयानन्द जी संस्कार विधि में ग्रहाश्रम प्रकरण में लिखते है।

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा,

न ते येन वदन्ति धर्मम।

नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति,

न तत सत्य यच्छलेनाभ्यु पेतम।। महाभारते।।

अर्थात् वह सभा का परिवार नहीं है, जिसमें वृद्ध पुरूष न होवे। वे वृद्ध नहीं है जो धर्म की बात नहीं बोलते। वह धर्म नहीं है, जिसमें सत्य नहीं है और न व सत्य है जो छल से युक्त हो।

स्वाध्यायेन जपैर्होमेस्त्रेविधिनज्यया सुतैः।

महायज्ञैश्च यज्ञेश्य ब्राहीयं क्रियते तनुः।। (मनु०)

अर्थातः मनुष्य को चाहिए कि धर्म से वेदादि शास्त्रों का पठन–पाठन गायत्री,–प्रणवादि का अर्थ विचार, ध्यान, अग्नि होत्रादि होम, कर्मोपासना ज्ञान–विद्या, पौर्णमास्यादि, इष्टि, पन्चमहायज्ञ, अग्निष्टुप आदि न्याय से राज्यपालन, सत्योपदेश और योगाभ्यासदि उत्तम कर्मों से इस शरीर को अर्थात् ब्रह्मसम्बन्धी करें।

सत्यार्थ प्रकाश से– मनुष्य उसी को कहना कि मनन शील होकर स्वात्मवत अन्यो के सुखः दुख और हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे व महाअनाथ निर्बल और गुण रहित क्यों न हो रक्षा उन्नति और प्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानी और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे प्राण ही भले चले जाये, परन्तु मनुष्यपन रूप धर्म से प्रथक कभी न हो।

मानव के नव निर्माण का आधार वैदिक सोलह संस्कार है– संस्कार का अर्थ किसी वस्तु के रूप को बदल देना वैदिक संस्कृति में मानव जीवन निर्माण के लिए सोलह संस्कारों को विधान है। इसका अर्थ है कि जन्म से सोलह वार मानव को बदलने की प्रक्रिया है। जैसे लोहार लोहे को अग्नि में डालकर अपने अनुसार वस्तु का संस्कार देता है। उसी प्रकार बालक के उत्पन्न होने से पहले और बाद में संस्कारों की भट्टी में डालकर दुगुर्ण निकाल कर सदगुण बनाने की प्रक्रिया है। चरकऋषि ने कहा है – संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते

अर्थात संस्कार से पूर्व जन्म के दुर्गणों को हटा कर सदगुणों का आधान कर देने का विधान हैं बालक का जन्म होता है तो वह दो संस्कारों को लेकर चलता है, एक जन्म जन्मान्तरों के संस्कार दूसरा माता–पिता के संस्कारों का वंश परम्परा से करता है। वैदिक संस्कार व संस्कृति की योजना से ही मानव का नव आदर्श संस्कारिक निर्माण होता है।

यह आवश्यक है– उपेक्षणीय नहीं

श्रद्धे पाठक गणः आज समाज सुधारकों को आज मानव जगत में हो रहे कुसंस्कारों और अत्यधिक पाश्चात्य सभ्यता के वातावरण को देख कर चिन्तित है, आज परिवार टूट रहे हैं, स्वार्थ और अत्यधिक सुख पाने की लालसा में माता–पिता व अन्य बुजुर्गों की अवेहलना हो रही है। कितना सुन्दर और संस्कारिक भारतीयों का अतीत था, सभी भारतवासी सुख उठाते रहे और भारत धरती का स्वर्ग धाम बना रहा। परन्तु आज से छः हजार वर्ष व्यतीत हुए कि भारतीयों के परिवार वैदिक शिक्षा को छोड़कर अवैदिक शिक्षा पर चलकर निरन्तर धार्मिक सामाजिक राजनैतिक के उच्च आदर्शों को छोड़ते जा रहे हैं।

युग निर्माण के लिए आवश्यक प्रयत्न करना इस लिए उचित है कि जिस दुनिया में हम रते रहते हैं, यदि वह कुसंस्कारी व दूषित रही तो अपने लिय सदा संकट और चिन्ता की स्थिति बनी रहेगी। यदि चारों ओर विवेकहीन व दुष्टतापूर्ण वातावरण बुराइयों और विचार धरा हवा और सर्दी गर्मी की तरह अपने ऊपर आक्रमण करती है। इसलिए आवश्यक है कि बुराइयों से सदैव संघर्ष करना चाहिए। चोर, डाकू–दुष्ट, दुराचारी, शरारती और अन्धविश्वासी लोगों के बीच रहकर कोई भी व्यक्ति अपनी सज्जनता व आदर्शों की रक्षा नहीं कर सकता है। किन्तु श्रेष्ठ मनुष्यों का उत्तरदायित्व है कि वेदानुकूल संस्कार व संस्कृति के प्रचार प्रसार और उसको अक्षुष्ण रखने के लिए सदैव तत्पर रहे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते हैं कि हे मनुष्यों तुम ईश्वर द्वारा प्रदत्त, अग्नि, वायु–जल–वनस्पति व अन्य दिव्य साधनों द्वारा एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकते हो तो ईश्वर द्वारा प्रदत्त वैदिक धर्म पर क्यों नहीं चलते हो यही तुम्हारी अशान्ति व दुखों का कारण यही है।

– प्रेरक कथाएँ

सच्ची शोभा

महाराष्ट्र के इतिहास में अपनी न्यायप्रियता के लिए श्रीरामशास्त्री का नाम सर्वोपरि अंकित है। वे पेशवा माधवराव के गुरू थे, मन्त्री थे और राजा के प्रधान न्यायाधीश थे। इतना सब होने पर भी अपने रहन–सहन में वे केवल एक ब्रह्मण मात्र थे। एक साधारण से घर में में उनका निवास था, जिसमें किसी प्रकार के वैभव का कोई लक्षण या तड़क–भड़क दिखाई नहीं देती थी।

किसी पर्व के अवसर पर श्री शास्त्री जी की धर्मपत्नी राजभवन में पधारी थी। रानी तो अपने गुरू की पत्नी को देखकर चकित ही रह गई। राजगुरू की पत्नी और उनके शरीर पर कोई सोने का तो क्या चांदी का भी आभूषण नहीं था। पहनी हुई साड़ी भी बहुत ही साधारण प्रकार की थी। रानी को लगा कि इसमें तो राजकुल की निन्दा है। जिस गुरू के घर पर पेशवा प्रतिदिन प्रणाम करने के लिए जायें, उस गुरू की पत्नी इस प्रकार दरिद्रवेश में रहे तो लोग तो पेशवा को ही कृपण बतायेंगे।

रानी ने गुरूपत्नी को बहुमूल्य वस्त्र पहनाये, रत्नजटित सोने के आभूषणों से अलंकृत किया। जब उनके विदा होने का समय आया, तब पालकी में बैठा कर उन्हें विदा किया। पालकी रामशास्त्री के द्वारा पर पहुंची। कहारों ने द्वार खटखटया। द्वारा खुला और झट बन्द हो गया। रामशास्त्री ने अपनी पत्नी को उस वेश में देख लिया। कहारों ने फिर पुकारा– " शास्त्री जी! आपकी धर्मपत्नी आई हैं द्वार खोलिये।"

शास्त्री जी भीतर से ही बोले–" बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से सजी वे कोई और देवी होंगी। मेरी ब्राह्मणी ऐसे वस्त्र और आभूषण नहीं पहन सकती, तुम लोग भूल से इस द्वार पर आये हो।"

शास्त्री जी भीतर से ही बोले–" बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से सजी वे कोई और देवी होगी। मेरी ब्राह्मणीं ऐसे वस्त्र और आभूषण नहीं पहन सकती, तुम लोग भूल से इस द्वार पर आये हो।"

शास्त्री जी की पत्नी अपने पति देव के स्वभाव को जानती थी। उन्होंने कहारों को लौट चलने के लिए कहा। राजभवन जाकर उन्होंने वे वस्त्राभूषण उतार कर अपने पुराने वस्त्र धारण किये और रानी से बोली– "इन वस्त्राभूषणों ने तो मेरे लिए मेरे घर का द्वार ही बन्द करा दिया है।" वे देवी पैदल ही घर पर लौट कर आईं। द्वार खुला था। घर में आ जाने पर शास्त्री जी ने उनसे कहा–" बहुमूल्य वस्त्राभूषण या तो राजपुरूषों को शोभा देते हैं या मूर्ख उनके द्वारा अपनी अज्ञता छिपाने का यत्न करते हैं। सत्पुरूषों का आभूषण तो सादगी ही है। वही सच्ची शोभा है।

मुनिवर पं० गुरूदत्त विद्यार्थी

–पं० गंगा प्रसाद विद्यार्थी

जन्म : श्री गुरूदत्त का जन्म पंजाब के मुल्तान नगर में २६ अप्रैल १८६४ ई० को हुआ था। इनके पिता का नाम लाला रामकृष्ण सरदाना था। फारसी क नाम पंण्डित और शिक्षा विभाग में सुयोग्य अध्यापक थे। गुरूदत्त को अपने पिता से उत्तम शारीरिक बल, तीव्र बुद्धि और दृढ़ स्मरण शक्ति माता से संयम और धैर्य तथा कुल जन्य वीरता उत्तराधिकार में मिले।

शिक्षा : गुरूदत्त के पिता ने घर पर ही उनको उर्दू, फारसी तथा सामान्य ज्ञान की शिक्षा दी, और ८ वर्ष की आयु में उन्हें झंग के अपने ही स्कूल में प्रविष्ट करा दिया। वहां से मिडिल पास करने के बाद वह अपनी जन्म भूमि मुल्तान चले गए और वहां एक हाईस्कूल में भरती हो गए गुरूदत्त में अध्ययन की रूचि बहुत थी। वे स्कूली पुस्तकों के अतिरिक्त पुस्तकालय से बहुत सी ज्ञान की पुस्तकें आत्मसात करते रहते थे। आप मैट्रीकुलेशन परीक्षा में पंजाब प्रान्त भर में पांचवें नम्बर पर आए। जनवरी १८८१ में आप गवर्नमेंट कालेज लाहौर में भरती हो गए। उस समय पंजाब में वही एक मात्र कालेज था। सन् १८८३ में गुरूदत्त ने एफ०ए० पास किया और युनिवर्सिटी भर में सर्वप्रथम रहे। सन् १८८५ में गुरूदत्त ने बी०ए० पास किया और फिर युनिवर्सिटी भर में प्रथम रहे। लाल हंसराज ने इसी परीक्षा में द्वितीय स्नाान पाया था। सन् १८८६ में गुरूदत्त ने फिजिक्स अर्थात पदार्थ विज्ञान में एम०ए० पास किया और पुनः न केवल सर्वप्रथम रहे बल्कि इतने अधिक अंक पाए जितने कि तब तक किसी भी भारतीय ने न पाए थे।

शिक्षक : एम.ए. पास करने के बाद पं० गुरूदत्त गवर्नमेण्ट कालेज लाहौर में साइन्स के प्रोफेसर बनाए गए। वह पहिले ही भारतीय थे जिन्हें यह पद प्राप्त हुआ था। कालेज में इनकी योग्यता और शिक्षण शैली की धाक जम गई। दो तीन वर्ष तक ही आपने इस पद पर रहने से उनके आर्यसमाज के प्रचार कार्य में विघ्न पड़ता है तो उनसे त्यागपत्र दे दिया और कालेज के अधिकारियों तथा अन्य हितैषियों के दबाव को भी अमान्य कर दिया।

आर्य समाज में प्रवेश – गुरूदत्त ने जब वे स्कूल में ही थे बहुत सी धार्मिक पुस्तकें पढ़ीं, फिर सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा जिससे उन्हें सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ, और वह २० जून १८८० ई० को ही लाहौर आर्यसमाज में प्रविष्ट हो गए। तथा अष्टाध्यायी व्याकरण ग्रन्थ पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। बाद में अपने निघण्टू, निरूक्त और महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा वेद भाष्यों को बहुत मनन पूर्वक पढ़ा और वेद विद्या के पण्डित बन गए। फिर असत्य वेद भाष्यों का प्रबल खण्डन किया। सत्यार्थ प्रकाश को तो उन्होंने १८ बार पढ़ा वे कहते थे कि हर बार उन्हें नवीन ज्ञान प्राप्त हुआ।

दयानन्द से भेंट– जब दयानन्द के १८८३ ई० में जोधपुर में विष दिया गया और चिकित्सा के लिए ५ महीने बाद अक्टूबर में उन्हें आबू होकर अजमेर लाया गया तो स्वामी जी की अस्वस्थता का समाचार फैल गया। लाहौर आर्य समाज ने स्वामी जी की सेवा के लिए गुरूदत्त विद्यार्थी और लाला जीवनदास को अजमेर भेजा। यद्यपि गुरूदत्त की आयु उस समय केवल १६ वर्ष की थी परन्तु ज्ञान, अनुभव और प्रभावशाली वक्ता होने के कारण वह एक नेता माने जाते थे।

महर्षि के सारे शरीर में विष के कारण फुंसियां हो गई थीं, शरीर अपेक्षाकृत दुर्बल हो गया था, प्रत्येक श्वास के साथ सख्त पीड़ा हो रही थी। परन्तु महान आश्चर्य था कि इस घोर कष्ट में भी स्वामी जी पूर्णतः शान्त चित्त थे उनके मुंह से एक आह तक न निकली। अन्तिम समय में महर्षि ने ईश्वर प्रार्थना की, वेद मंत्र पढ़े और प्राणायाम पूर्वक अन्तिम श्वास 'निकालने से पहिले कहा, "हे दयामय! हे सर्वशक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। आ हा! तैंने अच्छी लीला की।" उनके मुखमण्डल पर अद्भुत अभा और प्रसन्नता थी। अन्य लोगों के साथ गुरूदत्त यह सब देख सुनकर मन्त्रमुग्ध से रह गए। उनने दयानन्द का ईश्वर से साक्षात् वार्तालाप सुना, ईश्वर के सम्बन्ध में उनके रहे सहे सभी संशय विनष्ट हो गए।

गुरूदत्त के कार्य– लाहौर में ८ नवम्बर १८८३ को महर्षि दयानन्द की स्मृति में डी०ए०वी० कालेज की स्थापना का विचार किया गया। गुरूदत्त के ओजस्वी भाषण से तत्काल सात हजार रूपए एकत्र हो गए। वह बहुत ही प्रभावशाली वक्ता थे अतएव वार्षिकोत्सव पर उनकी बहुत मांग रहती थी और वे वहां से डी०ए०वी० स्कूल के लिए प्रभूत राशि भिजवाते थे। उन्होंने वेदों को स्थान आधुनिक विज्ञान से उच्चतर प्रमाणित किया। उन्होंने सायण, महीधर और मैक्समूलर आदि के वेदभाष्यों को निरूक्त विरूद्ध सिद्ध किया। वैदिक संज्ञा विज्ञान पर उन्होंने कई सारगर्भित लम्बे लेख लिखे। उनका लिखा वैदिक शब्द कोष "आक्सफोर्ड विद्यालय में पढ़ाया जाता था।

गुरूदत्त अपनी विद्वता व वैदिक ज्ञान के कारण पंडित प्रसिद्ध हुए। बचपन से ही मुनियों जैसी एकाग्रता तथा प्राणायाम में रूचि व अभ्यास के कारण वे मनुविर कहलाये। मुनिवर पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी को हमारी सादर प्रणामांजलि। हम उनसे कुछ सीखें और उनके दिखाए मार्ग पर दृढ़ता से अनुसरण करें।

सच्चा सतयुग आयेगा

प्रणवीर सिंह
आर्य समाज फरीदपुर, बरेली

वैदिक संस्कृति को जब सारा जग अपनायेगा।
इस कलियुग में निश्चय ही तब सच्चा सतयुग आयेगा।।
कंठ सूखता जो मानवता का मरूस्थली हवाओं से
तन, मन अन्तः करण घिरा जो रोगों म विद्याओं में
आर्य समाज से वध ज्ञान जल घर–घर तक जब जायेगा।
तब जीवाणु भ्रष्ट चिन्तन के जड़ से सभी मिटायेगा
वैदिक संस्कृति का अमृत जल नूतन प्राण जगायेगा।
इस कलियुग में निश्चय ही ..... १.
आर्य समाज सद्ज्ञान भरेगा, हर शंसय भटकाओ में
उज्ज्वल होगा लक्ष्य नयन में बढ़ने की गति पांवों में
सहज सरल सन्मार्ग मिलेगा, और सभी द्विविधाओं में
विघ्नों से लड़ने का सहस्र होगा स्वयं शिराओं में
दृढ़ मन से मानव जनहित के पथ पर पाँव बढ़ायेगा।
इस कलियुग में निश्चय ही ..... २.
संप्रदाय के लिए अब तो आंगन बटंपायेगें
जाति पाति भाषा के कारण कही न मन बटंपायेगें
मिलने की आवाज उठेगी फिर उठती दीवारों से
छलकेगा फिर प्रेम हृदय के कोमल कूल कछारों से
युद्ध स्वार्थ के लिए न कोई मानव को छल पायेगा
दुष्चिन्तन का वना कुहासां प्रणवीर सभी कट जायेगा।
इस कलियुग में निश्चय ही ..... ३.

– प्रेरक कथाएँ

रणजीत सिंह की दयालुता

एक समय की बात है कि पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह कही जा रहे थे। वे घोड़े पर सवार थे कि मार्ग में कहीं से अकस्मात् एक ढेला आकर उनके लग गया। महाराज को बड़ी तकलीफ हुई। उनके सिपाही दौड़े और एक बुड़िया को लाकर उनके सम्मुख खड़ा कर दिया।

बुढ़िया तो पहले ही भय के मारे कांपने लगी थी, सिपाहियों को देखकर उसका डर और भी बढ़ गया। उसके हाथ जोड़कर कहा– "महाराज! मेरा बच्चा तीन दिन से भूखा पड़ा है, कहीं खाने को कुछ नहीं मिला। सामने के पेड़ पर पका बेल देख कर मैंने उसको तोड़ने के लिए ढेला मारा था कि वह चूक कर आपको लग गया। ढेला निशाने पर लगता तो बेल टूट जाता और उसे खिला कर मैं भूख से मरते अपने बच्चे के प्राण बचा लेती। पर मेरे अभाव से आप बीच में आ गये। ढेला आप को लगा गया। मैं निर्दोष हूँ सरकार मैंने ढेला आपको नहीं मारा था। मुझे क्षमा कर दीजिए।"

महाराज राणजीत सिंह ने बुढ़िया की बात बड़े ध्यान से सुनी और फिर अपने आदमियों से कहा– " बुढ़िया को एक हजार रूपये और उसके साथ खाने पीने का सामान देकर उसको उसके घर पहुंचा दीजिए।"

लोगों ने कहा–"सरकार! यह आप क्या कर रहे हैं? इसने आपको ढेला मारा, इसे तो कठोर दण्ड मिलना चाहिए।"

रणजीतसिंह बोले–" भाई! जब बिना प्राणों का और बिना बुद्धि का वृक्ष ढेला मारने पर सुन्दर फल देता है, तब मैं प्राण तथा बुद्धि वाला होकर इसे दण्ड कैसे दे सकता हूँ। मुझे तो उससे कुछ अधिक ही देना चाहिए।" रणजीतसिंह की दयालुता के अनेक उदाहरण प्रचलित हैं।

पृष्ठ ३ का शेष

ब्रिटिश साम्राज्य पर ....

की संख्या पांच–छः सौ मात्र बनते हैं।

शासन को विश्वास था कि इस गोलीबारी से जनता आतंकित हो जाएगी परन्तु हुआ इसका उल्टा। इस घटना से पूरे राष्ट्र में क्रोध की लहर दौड़ गई। १५ अप्रैल को तो ऐसा प्रतीत होता था। कि मानों पंजाब में खुली क्रान्ति का नजारा हो। वहां की स्थिति का अनुमान तो इसी से लगाया जा सकता है कि शासन की ओर से लाहौर की जनता पर हवाई जहाज से गोले गिराए गए तथा मशीन गनों द्वारा गोलियां बरसाई गई । पंजाब के गुजरानावाला, लाहौर और अमृतसर जिलों में मार्शल ला लागू कर दिया गया।

फौजी शासन में निहत्थी व बेगुनाह जनता पर जो–जो अमानुषिक अत्याचार ढाए गए उसकी कल्पना मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते है। निम्न विवरणों से पता चलता हैं कि अपने को सभ्य सभ्य कहलाने वाली अंग्रेज फौज किसहद तक क्रूर हो सकती है–

१. अधिकांश निर्दोष व्यक्तियों को नंगा कर शहर के चौराहों पर उनके हाथ–पैर रस्सी से खम्भों में बांध कर उन पर हन्टरों की वर्षा की गई। उसमें भी तीन चार लोगों की मृत्यु की खबर है। किन्तु सरकार का कहना था कि "किसी की मृत्यु नहीं हुई। १५ अप्रैल, १६१६ से १५ मई १६१६ के बीच तीन तीन जिलों में ३२ व्यक्तियों को हन्टर मारे गए। औसतन हर व्यक्ति को "मात्र' ग्यारह हन्टर मारे गए।

२. हजारों विद्यार्थियों को १६–१६ मील पैदल चल कर स्कूलों में हाजिरी देने के लिए बाध्य किया गया तथा सैकड़ों छात्रों व शिक्षकों को गिरफ्तार कर नजरबन्द कर दिया गया। और तो और ६ से ७ वर्ष की आयु के बच्चों को परेड में खड़ा कर ब्रिटिश झण्डे को सलाम करने पर बाध्य किया गया।

३. दीवारों पर चिपकाए गए मार्शल ला पोस्टरों की सुरक्षा की जिम्मेदारी मकान मालिकों पर जबरन सौंपी गई।

४. मार्शला ला के कायदे कानूनों से नावाकिफ शादी में शामिल पूरे बारातियों पर सबके सामने चौराहों पर हन्टर लगाये गए।

५. इस्लामिया स्कूल के छः विद्यार्थियों को इस लिए कोड़े लगाए गए चूंकि वे ज्यादा लम्बे थे।

६. लोहे के पिंजरे में नगर के चौराहों पर रख कर उनमें लोगों को पकड़ कर बन्द रखा गया जिनमें कई सम्भ्रान्त व्यक्ति भी थे।

७. सजा देने के ऐसे–ऐसे नए तरीके अपनाए गए जिसकी कल्पना भी किसी देश का सभ्य समाज नहीं कर सकता जैसे लोगों को जमीन पर पेट के बल रेंग कर चलाया गया।

८. पंजाब की भीषण गर्मी में भी गिरफ्तार लोगों को खुली ट्रकों में भरकर १५–१५ घंटे खड़ा रखा गया।

९. फरार व्यक्तियों को हाजिर करने के लिए उनके प्रियजनों को बंधक बना कर उनकी जायजाद जब्त अथवा नष्ट कर दी गई।

१०. सजा के बतौर हजारों हिन्दुस्तानियों की घरों की बिजली और पानी के कनेक्शन काट दिए। यूरोपियनों के रहने के लिए हिन्दुस्तानियों के घर जबरन खाली कराए गए। यूरोपियनों के प्रयोग हेतु जिस किसी भी हिन्दुस्तानी के पास कार आदि वाहन थे उन्हें जबरन छीन लिया गया।

११. कई जगह फौजी अदालतों में ८५२ व्यक्तियों पर मुकदमें चलाए गए जिनमें ५८२ की सजाए सुनाई गई एवं बीसयों को फांसी की सजा दी गई।

ब्रिटिश सत्ता इसी भ्रम में रही कि यह काण्ड भारतीय जनमानस को सदा आतंकित करता रहेगा। परन्तु वे यह सोच भी न सके कि यही घटना आगे चलकर ब्रिटिश साम्राज्य की ताबूत में कील ठोंकने का काम करेगी। आगे चलकर महान क्रान्तिकारी ऊधम सिंह ने १३ मार्च, १९४० को इस काण्ड के एक जिम्मेदार सर माइकल ओ डायर को लन्दन में गोली माकर धराशायी कर दिया था।

इतिहास गवाह है कि 'जलियांवाला बाग काण्ड' के बाद स्वतंत्रता संग्राम में इतनी तेजी आई कि चन्द्र वर्षों कके अन्दर ही अंग्रेज भारत स्वतंत्र करने को विवश हुए।

गुरूकुल पूठ में शोक सभा एवं शान्ति यज्ञ

२० मार्च को प्रातः गुरूकुल के पूर्व छात्र धर्मेन्द्र कुमार आर्य की माता जी श्रीमती ऊषा देवी आर्या की हुई अचानक मृत्यु से सभी कुलवासी शोकाकुल हो गए। पवित्र यज्ञशाला में यज्ञ किया तथा बाद में शोक सभा का आयोजन संस्था के संचालक सवमी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में हुआ आचार्य दिनेशक कुमार जी ने बताया कि हमारे साथी धर्मेन्द आर्य की माता जी का अचानक जाना हम सभी कुल वासियों के लिए दुःखद समाचार है वे जब गुरूकुल पूठ में आती थी उनका यह स्नेह सदा याद आता रहेगा। तो हम सभी साथियों के लिए कुछ न कुछ घर से बना कर लाती थीं धर्मेन्द्र के पिता विजेन्द्र आर्य पुरूषार्थी धार्मिक आदर्श किसान हैं।

उनके पिता चौ० भोपाल सिंह नारंगपुर मेरठ वाले आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं सर्वोदयी नेता थे चौ० तेजसिंह जी आर्य के साथ बहुत कार्य किया है कन्या गुरूकुल नारंगपुर की स्थापना उनका ही सपना था स्वामी जी से मिलकर उसे प्रारम्भ किया और भूमि दान में दी अपनी बेटी को आचार्य बनाया। ऊषादेवी आर्या– आर्य सामज पाथौली, सरधना मेरठ के प्रतिष्ठान आर्य परिवार से थीं तभी इन्होंने अपने बेटे और बेटी को गुरूकुल में पढ़ाया। अचार्य राजीव जी एवं आचार्य कुलदीप जी ने भी उनके विषय में संस्मरण सुनाये स्वामी अखिलानन्द जी ने परिवार में जाकर शान्ति यज्ञ किया और गुरूकुल की ओर से सान्तवना प्रदान की सभा मन्त्री स्वामी जी ने भी अपनी श्रद्धांजलि देते हुए गुरूकुल परिवार एवं आर्य मित्र परिवार की ओर से आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की।

–प्रदीप शास्त्री, गुरूकुल पूठ–हापुड़

वैदिक मिशन मुम्बई का महोत्सव सम्पन्न हुआ

दिनांक २४, २५ मार्च २०१८ को आर्य समाज सांताक्रुज लिंकिंग रोड मुम्बई के पश्चिम में वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसके संयोजक डॉ० सोमदेव शास्त्री जी रहे। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी महराज की अध्यक्षता में वेद सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन में अनेक मुर्धन्य आर्य सन्यासियों ने एवं अनेक गुरूकुल के आचार्यों ने भाग लिया।

इसमें वेद विज्ञान पर विशेष चर्चा हुई सर्वादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने वेद विज्ञान पर चर्चा की इस अवसर पर मुम्बई प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लाल सिंह व अनेक प्रतिष्ठत व्यक्तियों ने भाग लिया।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ ने अपने वकतव्य दिये। श्री अरूण अबरोल, श्री संदीप आर्य, श्री संगीत शर्मा जी, श्रीमती सुदक्षिणा जी, श्रीमती रमा आर्या, श्री प्रणव शास्त्री, आदि महानुभाव उपस्थित रहें।

प्रेरक कथाएं–

सत्य के लिए त्याग

अश्विनीकुमारदत्त नाम के एक व्यक्ति किसी समय हाई स्कूल के छात्र थे। उस समय कलकत्ता विश्वविद्यालय का यह नियम था कि सोलह वर्ष से कम आयु के विद्यार्थी हाई स्कूल की परीक्षा में नहीं बैठ सकते थे। अश्विनी बाबू जब हाई स्कूल की तैयारी कर रहे थे उस समय उनकी आयु चौदह वर्ष की ही थी। किन्तु अन्य अनेक छात्रों की ही भांति उन्होंने भी अपनी आयु सोलह वर्ष लिखाई और वे परीक्षा में बैठ गये।

उसके ठीक एक वर्ष के उपरान्त एम०ए० के प्रथम वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाने के उपरान्त सहसा अश्विनी बाबू को अपने आचरण के दोष का आभास होने लगा। अपने असत्य आचरण से उनको स्वयं पर भी ग्लानि होने लगी।

अन्य कोई उपाय न देकखकर वे अपने कालेज के प्रधानार्च के पास पहुंचे और उन से सारी बात स्पष्ट कह दी। इसके साथ ही उसका निराकरण करने का भी उन्होंने आग्रह किया।

अश्विनीकुमार को चैन नहीं मिल रहा था। वे विशविद्यालय के रजिस्ट्रार के समीप उपस्थित हुए। उनको भी अपनी सारी स्थिति से परिचित करा कर उनसे इसके निराकरण की प्रार्थना की। रजिस्ट्रार ने भी वही उत्तर दिया–" अब तो बात हाथ से बाहर हो गई है।"

अश्विनीकुमार को शान्ति नहीं मिली। वे परेशान रहने लगे। अन्त में उन्होंने इसका प्रायश्चित करने का निश्चय किया।

परिणाम स्वरूप दो वर्ष अपनी आयु बढ़ा कर जो लाभ उन्होंने उठाया था उसको बराबर करने के लिए उन्होंने दो वर्ष तक के लिए अपना अध्ययन स्थगित कर दिया। इस प्रकार उन्होंने अपने मन की शान्ति को प्राप्त किया।

आर्य मित्र
नारायण ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० ३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : naup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

आर्य समाज के कार्यक्रमों की झलकियां

सभा कार्यालय अधीक्षक भूतनचन्द्र पाठक जी द्वारा स्वामी यशवीर जी महाराज का सम्मान करते हुए

महाशय श्री धर्मपाल जी आर्य (एम.डी.एच.) के ९५वें जन्म दिवस समारोह की झलकियां

आर्यसमाज धरौली सुल्तानपुर अमेठी के वार्षिक उत्सव की झलक

आचार्या पवित्रा जी द्वारा वेद प्रचार में ध्वजा रोहण करते हुए

सभामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी द्वारा वेद प्रचार

सत्यनारायण ट्रस्ट द्वारा वेदप्रचार समारोह की झलकियां

आर्य समाज कीर्ति नगर दिल्ली में स्वामी जी द्वारा वेदप्रचार

आर्य सामज सूरजकुण्ड नोएडा का वेद प्रचार समारोह की झलक

वैदिक मिशन मुम्बई समारोह की झलक

वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष आचार्य सोमदेव जी के साथ बहनें

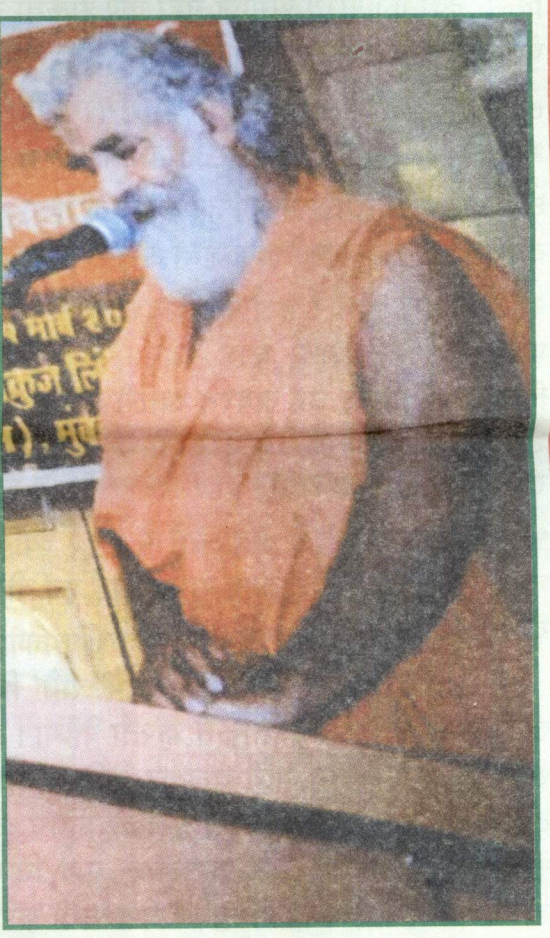

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।